International Journal of Sanskrit Research 2018; 4(1): 121-125

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2018; 4(1): 121-125
© 2018 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 11-11-2017
Accepted: 14-12-2017

**डॉ० अशोक कुमार**
पूर्व गवेषक, ल0 न0 मि0 वि0, दरभंगा, साहित्याचार्य, बी0 एड0, बेलामेध, भाया–दलसिंहसराय, समस्तीपुर, बिहार, भारत

**Corresponding Author:**
**डॉ० अशोक कुमार**
पूर्व गवेषक, ल0 न0 मि0 वि0, दरभंगा, साहित्याचार्य, बी0 एड0, बेलामेध, भाया–दलसिंहसराय, समस्तीपुर, बिहार, भारत

# गर्भाधान संस्कार की पवित्रता

## डॉ० अशोक कुमार

**सारांश**
तथाकथित धार्मिक लोगों ने, धर्म के ठेकेदारो ने, तथाकथित झूठे समाज ने, तथाकथित झूठे परिवार ने यही समझाने की कोशिश की है कि सेक्स, काम, यौन, अपवित्र है, घृणित है। नितांत पागलपन की बातें है। अगर यौन घृणित और अपवित्र है, तो सारा जीवन अपवित्र और घृणित हो गया। अगर सेक्स पाप है तो पूरा जीवन पापमय हो गया, पूरा जीवन निंदित कंडेम्ड हो गया। अगर जीवन ही पूरा निंदित हो जाएगा, तो कैसे प्रसन्न लोग उत्पन्न होंगे, कैसे सच्चे लोग उपलब्ध होंगे ? जब जीवन ही पूरा का पूरा पाप है तो बुद्ध, महावीर, राम, कृष्ण, क्राइस्ट आदि पवित्रात्मा कैसे होंगे।
सेक्स को गाली न दे, सेक्स के पास ऐसे जाएं, जैसे मंदिर के पास। पत्नी को ऐसा समझें, जैसे कि वह प्रभु है। पति को ऐसा समझें कि जैसे कि वह परमात्मा है। और गंदगी में, क्रोध में, कठोरता में, द्वेष में, ईर्ष्या में, जलन में चिंता के क्षणों में कभी भी सेक्स के पास न जाएं। क्योंकि स्रष्टा के निकटतम है। अगर हम पवित्रता से, प्रार्थना से सेक्स के पास जाएं तो हम परमात्मा की झलक को अनुभव कर सकते हैं, लेकिन हम तो सेक्स के पास एक घृणा, एक दुर्भाव, एक कंडमनेशन के साथ जाते हैं। जितना आदमी चिंतित होता है, जितना परेशान होता है, जितना क्रोध से भरा होता है, जितना घबराया होता है, जितना एंग्विश में होता है, उतना ही ज्यादा वह सेक्स के पास जाता है। लेकिन आनंदित आदमी सेक्स के पास नहीं जाता। दुःखी आदमी सेक्स की तरफ जाता है। क्योंकि दुःख को भुलाने के लिए इसको एक मौका दिखाई पड़ता है। लेकिन स्मरण रखें कि जब आप दुःख में जाएंगे, चिंता में जाएंगे उदास, हारे हुए, क्रोध में, लड़े हुए जाएंगे, तब आप कभी भी सेक्स की उस गहरी अनुभूति को उपलब्ध नहीं कर पाएंगे, जिसकी कि प्राणों में प्यास है। उस अध्यात्मिक तल की संतान वहाँ नहीं मिलेगी। इसलिए दीवाल खड़ी हो जाती है और परमात्मा का जहाँ कोई अनुभव नहीं हो पाता।

**प्रस्तावना**
आज भौतिकवादी मानव भले ही गर्भाधान संस्कार की खिल्ली उड़ाते है। अपनी स्वेच्छाचाारिता की कुत्सित मनोवृत्ति को उत्तरोत्तर बढ़ाकर भले ही विषयासक्त माता–पिताओं को स्वप्न में भी ध्यान नहीं होता है कि हम क्या करने चले है। केवल स्वेच्छाचारितापूर्ण विषयानन्द की सीमा तक ही उनका यह प्रयास होता, उनका सहवास भी उद्देश्य शून्य और उनसे उत्पन्न संतान भी आज की भाषा में ऐक्सिडैंटल संतान ही कही जा सकती है। हम बलपूर्वक कहते हैं कि 85 प्रतिशत गर्भाधान अनियमित रूप से होता है। इसे हम कैसे धर्मपूर्वक कह सकते हैं। यही कारण है कि समाज की दिन पर दिन क्षीणता होती जाती है। अधर्मयुक्त प्रजा कभी अच्छी नहीं हो सकती। इसलिए गर्भाधान संस्कार की पवित्रता की चर्चा की इस में कर रहे हैं।
जीवन के सत्यों से आँखें चुराने वाले लोग मनुष्य के शत्रु हैं। जो आपसे कहें कि गर्भाधान और सेक्स की बात का विचार भी नहीं करना चाहिए। यह पाप का विषय है। गर्भाधान का धर्म से कोई संबंध नहीं है। वह आदमी सौ प्रतिशत गलत बात कहता है। क्योंकि संभोग की पवित्रता को बनाने की चर्चा पाप अगर है तो हम सब उसी रास्ते से आये हैं हम सब पापमय हैं। परमात्मा ने जिसको जीवन की शुरूआत बनाया है, वह पाप नही हो सकता है, लेकिन आदमी ने उसे पापमय कर दिया।
सच तो यह है कि बच्चे पैदा करने के लिए तो कोई संभोग करता ही नही है। बच्चे पैदा होना आकास्मिक है एक्सीडेंटल है। सेक्स में जाते हैं किसी और कारण से, बीच में बच्चे आ जाते हैं। बिना बुलाए बच्चों के साथ भी दुर्व्यवहार होगा, सद्व्यवहार नहीं हो सकता। क्योंकि उन्हें हमने कभी चाहा न था, कभी हमारे प्राणों की वह आकांक्षा न थी। हम तो किसी और ही तरफ गए थे, वे बाइप्रॉडक्ट हैं, प्रॉडक्ट नहीं। आज के बच्चे प्रॉडक्ट नहीं हैं, बाइप्रॉडक्ट हैं। वे उत्पत्ति नहीं है, वह उत्पत्ति के साथ कचरा है। जैसे फसल के साथ खर–पतवार पैदा हो जाता है। जैसे फैक्ट्री मालिक फैक्ट्री से अच्छी वस्तु का उपादन चाहता है, लेकिन कचरा भी उत्पन्न हो जाता है। वैसी ही आपका विचार, आपकी कामना दूसरी थी, बच्चे बिल्कुल आकस्मिक एवं कचरा हैं।

सारी दुनिया में हमेशा से यह कोशिश चली है वात्स्यायन से लेकर आज तक, यह कोशिश चली है कि सेक्स को बच्चों से किसी तरह मुक्त कर दिया जाए। उसी से बर्थ–कंट्रोल विकसित हुआ। संतति–नियमन विकसित हुआ, कृत्रिम साधन विकसित हुए कि हम बच्चों से भी बच जाएं और सेक्स को भी भोग लें। बच्चों से बचने की चेष्टा हजारों साल से चल रही है। गर्भनिरोधक ऐलोपैथिक, हैम्योपैथिक, या आयुर्वेदिक, आदि दवाओं का विकास नही होता। आयुर्वेद के चार–पाँच हजार साल पुराने ग्रंथ इसका विचार करते हैं और आज के लोग भी इसी की बात करता है। क्यों ? आदमी ने यह ईजाद करने की चेष्टा क्यों की?

इतना ही नही पहले तो स्त्री–पुरूष का विवाह होता था। अब तो स्त्री–स्त्री का पुरूष–पुरूष का समलैंगिक विवाह होने लगा है। लोग संतान उत्पन्न करना नहीं चाहते हैं, अगर चाहते तो समलैंगिक विवाह नहीं होता। अब तक तो स्त्री वैश्याएँ थी, किन्तु अब तो सभ्य मुलकों में पुरूष वैश्याएँ उपलब्ध है। आदमी ने यह ईजाद करने की चेष्टा क्यों की?

पुरूष भी बच्चे नहीं चाहता है। नहीं होते हैं तो चाहता है, इस कारण नहीं कि बच्चों से प्रेम है, बल्कि अपनी संपत्ति से प्रेम है। कल मालिक कौन होगा? बच्चों से प्रेम नहीं है। बाप जब चाहता है कि बच्चा हो जाए एक घर में, लड़का नहीं है, तो आप यह मत सोचना कि लड़के के लिए बड़े उसके प्राण आतुर हो रहे हैं। नहीं, आतुरता यह हो रही है कि मैं रूपया कमा–कमा कर मरा जा रहा हूँ, न मालूम कौन कब्जा कर लेगा। एक हकदार मेरे खून का उसको रक्षा के लिए होना चाहिए।

बच्चों के लिए कोई कभी नहीं चाहता कि बच्चे आ जाएं। बच्चों से हम बचने की कोशिश करते रहे हैं; लेकिन बच्चे पैदा होते चले गए। संभोग किया और बच्चे बीच में आ गए। वह उसके साथ जुड़ा हुआ संबंध था। यह कामजन्य संतति है। यह बाइप्रॉडक्ट है, सेक्सुअलटि की ओर इसलिए मनुष्य इतना रूग्ण, इतना दीन–हीन, इतना उदास, इतना चिंतित और दुःखी है। और ऐसे ही दुःखी आदमी सेक्स की तरफ जाता है। क्योंकि दुःख को भुलाने के लिए इसको एक मौका दिखाई पड़ता है। ऐसे अशांत आदमी इसलिए अशांत है कि वह अशांति में जन्मता है। उसके पास अशांति के कीटाणु हैं। उसके प्राणों की गहराई में अशांति का रोग है। जन्म के पहले दिन वह अशांति, दुःख और पीड़ा को लेकर पैदा हुआ है। जन्म के पहले क्षण में ही उसके जीवन का सारा स्वरूप निर्मित हो गया है। ऐसे लोग ही अशांति, दुःख और पीड़ा के कारण है। ऐसी संतान से माता–पिता, समाज या देश को कुछ भला हो सकेगा यह आशा रखना व्यर्थ है। क्योंकि जिस गर्भाधान संस्कार के तहत किये गये सहवास को यज्ञरूप कहा गया [1] वही धर्म विरूद्ध होने के कारण काम (सैक्स) को शत्रु बताया है और उससे सावधान रहने के लिए आदेश है। [2] पशु क्रिया से बदतर मनमानी सहवास से कुसंतान की बाढ से जगत व्याकुल हो उठा है।

आदमी वैश्या को अपनी सामर्थ के अनुसार रखता है। पत्नी को भी जीवन भर के लिए रखता है। यह सेक्स का शारीरिक तल है। शरीर पर बल प्रयोग हो सकता है। मन पर नही। अधिकतर लोग शरीर के तल पर ही रूक जाते हैं। इस तल पर जो अनुभव होगा, वह शरीर का होगा। गणिका पुत्र वात्स्यायन मुनि से लेकर पंडित कोक तक जिन लोगों ने भी इस तरह के शास्त्र–काम शास्त्र या कोक शास्त्र लिखे है, सेक्स के बाबात लिखे हैं; वे शरीर के तल से गहरे नही जाते।

सेक्स का दूसरा तल है मन का–मन चंचल है। शरीर से भी अत्यधिक अस्थिर है। यह तल शारीरिक तल से और ही समाज को विकृत करने वाला है। यथा प्रेम विवाह और तलाक पश्चिम देशों का अस्त–व्यस्त समाज है। मन का कोई भरोसा नही। सुबह कुछ कहता है, शाम कुछ कहने लगता है। घड़ी भर पहले कुछ कहता है, घड़ी भर बाद कुछ कहने लगता है। मन में तरलता है, पारे की तरह है–मन। जड़ा में बदल जाता है। पश्चिम के जो मनोवैज्ञानिक है फ्रायड से जुंग तक, उन सारे लोगों ने जो भी लिखा है वह सेक्स के दूसरी गहराई है। वह मन की गहराई है।

फ्रायड आध्यात्मिक तल की संतान के बारे में दो कौड़ी भी नहीं जानते। फ्रायड मानसिक तल से कभी भी ऊपर नहीं उठ पाया। उनकी सारी जनकारी रूग्ण सैक्स की है–हिस्टेरिकल, होमोसेक्सुअलटि, मास्टरबेशन–इस सबकी खोजबीन है। रूग्ण सेक्स, विकृत सेक्स के बाबत खोजबीन है, पैथलॉजिकल है। बीमार की चिकित्सा की वह खोज है। फ्रायड एक डॉक्टर है। फिर पश्चिम में जिन लोगों का उसने अध्ययन किया, वे मन के तल के सेक्स के लोग हैं। उसके पास एक भी अध्ययन नहीं है, एक भी केस हिस्ट्री नहीं, जिसको स्प्रिचुअल सेक्स कहा जा सके। उसको आध्यात्मिक सेक्स की कल्पना भी नही है।

अब सेक्स का तीसरा तल है आध्यात्म का। जो राम, कृष्ण, बुध, क्राईस्ट, ईशा आदि परम पुरुषों के माता–पिता इस तल के थे। वैसी सेक्स का तीसरा आध्यात्मिक तल फिर न आज तक पूरब में पैदा हुआ है, न पश्चिम में। शरीर के तल पर भी एक स्थिरता है। क्यों शरीर जड़ है और आत्मा के तल पर भी एक स्थिरता है, क्योंकि आत्मा के तल पर कोई परिवर्तन कभी होता ही नहीं। वहाँ सब शांत है, वहाँ सब सनातन है।

अथर्ववेद भी तीसरा आध्यात्मिक तल की संतान पैदा करने का आदेश देते है। मंत्र का भावार्थ है कि तीन पहिये वाले रथ के समान उत्तम पुरोहित तीन चक्र वाली सन्तान को खोजते हुए कहाँ ठहरे हैं। [3]

तीन चक्र वाली सन्तान से क्या अभिप्रेत है ? जब पति–पत्नी बिना किसी पूर्व निश्चय के केवल शारीरिक वासना की पूर्ति के लिए मिलते हैं तब उसके परिणाम स्वरूप उत्पन्न प्रथम शारीरिक तल की सन्तान ''एकचक्र'' है। आज के विज्ञान की भाषा में यह ''बायोलॉजिकल फिनॉमिना'' है। जब पति–पत्नी एक–दूसरे के गुणों का अनुशीलन करते हुए मानसिक शक्ति के आधार पर स्वसंपत्ति रक्षार्थ एवं सहायतार्थ सन्तान प्रसव करते हैं, वह द्वितीय मानसिक तल की ''द्विचक्र'' सन्तान है। इसमें शरीर धर्म के साथ मानस धर्म का भी सहयोग होता है। इसे ''इंटलेक्चुएल फिनॉमिना'' कहा जाता है। जब दत्पति इन दोनों भावनाओं से ऊँचा उठकर लोक कल्याणार्थ और आध्यात्मिक दृष्टि से धार्मिक सन्तान उत्पन्न करते हैं, वह तीसरा आध्यात्मिक तल की ''त्रिचक्र'' सन्तान है इसे ''स्पिरिच्युएल फिनॉमिना'' अथवा ''प्रूडंशियल फिनॉमिना'' कहा जाता है।

कुछ हद तक हमारे ऋषि–मुनियों ने गृह्यसूत्रों की रचना कर मानव को अनिवार्य गृह कार्य बता कर गर्भाधान संस्कार के माध्यम से काम को आध्यात्मिक बनाने का प्रयास किया था। जिसे राजनीतिक, बाह्याडम्बर पूर्ण धार्मिक कुप्रथा, समाजिक कुरीतियों आदि कारणों से निंदित और उपेक्षित कर दिया। जिसके कारण आज सारी दुनिया में मनुष्यता का स्तर रोज नीचे चला जा रहा है। लोग कहते हैं कि कलियुग आ गया है, इसलिए स्तर नीचे जा रहा है। लोग कहते हैं कि नीति बिगड़ गयी है, इसलिए स्तर नीचे जा रहा है। गलत, बेकार की और फिजूल की बातें कहते हैं।

सिर्फ एक फर्क पड़ा है। मनुष्य के गर्भाधान का स्तर नीचे उतर गया है। मनुष्य के गर्भाधान ने पवित्रता खो दी है, मनुष्य के संभोग ने वैज्ञानिकता खो दी है, सरलता और प्राकृतिकता खो दी है। मनुष्य का गर्भाधान जबरदस्ती, एक नाइट मेयर, एक दुःखद स्वप्न जैसा हो गया है। मनुष्य के संभोग ने हिंसात्मक स्थिति ले ली है। मनुष्य के जन्म की प्रक्रिया बेहूदी है, एब्सर्ड है। मनुष्य के पैदा होने की विधि पागलपन से भरी हुई है। वह एक प्रेमपूर्ण कृत्य नहीं है, वह एक पवित्र और शांत कृत्य नहीं है, वह एक ध्यानपूर्ण कृत्य नहीं है। इसलिए मनुष्य नीचे उतरता चला जाएगा।

एक कलाकार कुछ चीज बनाता हो, कोई मूर्ति बनाता हो और कलाकार नशे में हो, तो आप आशा करते हैं कि कोई सुंदर मूर्ति बन पाएगी ? एक नृत्यकार नाच रहा हो, क्रोध से भरा हो, अशांत हो, चिंतित हो, नशा में हो तो आप आशा करते हैं कि नृत्य सुंदर

हो सकेगा ? हम जो भी करते हैं वह हम किस स्थिति में हैं, इस पर निर्भर होता है। और सबसे ज्यादा उपेक्षित निग्लेक्टेड, गर्भाधान है। और बड़े आश्चर्य की बात है, उसी गर्भाधान से जीवन की सारी यात्रा चलती है, नए बच्चे, नई आत्माएँ जगत् में प्रवेश करती हैं। संभोग तो एक सिचुएशन है, जिसमें एक आकाश में उड़ती हुई आत्मा अपने योग्य स्थिति को समझकर प्रविष्ट होती है। आप सिर्फ एक अवसर पैदा करते हैं। आप बच्चे के जन्मदाता नहीं हैं, सिर्फ एक अवसर पैदा करते हैं। वह अवसर जिस आत्मा के लिए जरूरी, उपयोगी और सार्थक मालूम होता है, वह आत्मा प्रविष्ट होती है।

अगर आपने एक रूग्ण अवसर पैदा किया है, अगर आप नशे में, क्रोध में, दुःख में, पीड़ा में और चिंता में जो आत्मा अवतरित होगी, वह आत्मा इसी शारीरिक तल की हो सकती है। इससे ऊँचे तल की नहीं हो सकती है। इसलिए संभोग के प्रति दुर्भाव छोड़ दें। समझने की चेष्टा, प्रयोग करने की चेष्टा करे, और संभोग को एक पवित्रता की स्थिति दें।

एक पवित्रता की भाव दशा चाहिए संभोग के पास जाते समय। वैसी भाव दशा जैसे कोई मंदिर के पास जाता है, क्योंकि संभोग के क्षण में हम परमात्मा के निकटतम होते हैं, इसीलिए तो संभोग में परमात्मा सृजन का काम करता है और नए जीवन को जन्म देता है। हम क्रिएटर के निकटतम होते हैं। संभोग की स्थिति में हम स्रष्टा के निकटतम होते हैं। इसीलिए तो हम मार्ग बन जाते हैं और एक नया जीवन हमसे उतरता है और गतिमान हो जाता है। हम जन्मदाता बन जाते हैं।

श्रेष्ठ आत्माओं की पुकार के लिए श्रेष्ठ गर्भाधान का अवसर और सुविधा चाहिए तो श्रेष्ठ आत्माएं अवतरीत होती हैं और जीवन ऊपर उठता है। महावीर या बुद्ध या क्राइस्ट और कृष्ण आकस्मिक रूप से पैदा नहीं हो जाते हैं। यह उन दो व्यक्तियों के आध्यात्मिक परिपूर्ण मिलन का परिणाम है। मिलन जितना आध्यात्मिक होगा, जो संतति पैदा होगी, वह उतनी ही अद्भुत होगी। मिलन जितना शारीरिक होगा, जो संतति पैदा होगी वह उतनी ही कचरा और दलित होगी।

इसलिए मैंने कहा कि जिस दिन आदमी गर्भाधान के शास्त्र में निष्णात होगा, जिस दिन हम छोटे–छोटे बच्चों से लेकर सारे जगत् को उस कला और विज्ञान के संबंध में सारी बात कहेंगे और समझा सकेंगे, उस दिन हम बिल्कुल नए मनुष्य को, जिसे नीत्से सुपरमैन कहते थे, जिसे अरविंद अतिमानव कहते थे, जिसे राष्ट्रपति ए0 पी0 जे0 अब्दुल कलाम महामानव कहते हैं, जिसको महान् आत्मा कहा जा सके, वैसा बच्चा, वैसी संतति, वैसा जगत् निर्मित किया जा सकता है। और जब तक हम ऐसा जगत् निर्मित नहीं कर लेते हैं तब तक न शांति हो सकती है विश्व में, न युद्ध रूक सकते हैं, न घृणा रूकेगी, न अनीति रूकेगी, न दुश्चरित्रता रूकेगी, न व्यभिचार रूकेगा, न जीवन का यह अंधकार रूकेगा। नहीं मिटेंगे युद्ध, नहीं मिटेगी अशांति, नहीं मिटेगी हिंसा, नहीं मिटेगी ईर्ष्या। कितने दिन हो गए। कई हजार साल हो गए। मनुष्य–जाति के पैगंबर, तीर्थंकर, अवतार समझा रहे हैं मत लड़ो, मत करो हिंसा, मत करो क्रोध, लेकिन किसी ने कभी नहीं सुना। जिन्होंने हमे समझाया कि मत करो हिंसा, मत करो क्रोध, उनको हमने सूली पर लटका दिया। अहिंसा परमो धर्मः, प्रेम करो, एक हो जाओ, गाँधी जी हमें समझाते रहें। मैंने उसे गोली मार दी। यह कुछ उनकी शिक्षा का फल हुआ। दुनिया के सारे मनुष्य, सारे महापुरूष हार गए हैं, यह समझ लेना चाहिए।

अशांत आदमी इसलिए अशांत है कि वह अशांति में जन्मता है। उसके पास अशांति के कीटाणु हैं। उसके प्राणों की गहराई में अशांति का रोग है। जन्म के पहले दिन वह अशांति, दुःख और पीड़ा को लेकर पैदा हुआ है। जन्म के पहले क्षण में ही उसके जीवन का सारा स्वरूप निर्मित हो गया है। इसलिए बुद्ध हार जाएंगे, महावीर हारेंगे, कृष्ण हारेंगे, क्राइस्ट हारेंगे। हार चुके हैं। हम शिष्टतावश यह न कहते हों कि वे नहीं हारे हैं तो दूसरी बात है, लेकिन वे सब हार चुके हैं। और आदमी रोज बिगड़ता गया है और बिगड़ता चला जायेंगा। अहिंसा की इतने दिन की शिक्षा और हम छुरी से एटम और हाइड्रोजन बम परमाणु बम पर पहुँच गए हैं। यह अहिंसा की शिक्षा की सफलता हैं?

इसलिए जब तक मनुष्य के संभोग को सुव्यवस्थित, मनुष्य के संभोग को आध्यात्मिक बनाये अच्छी मनुष्यता पैदा नहीं हो सकती है। रोज बदतर–से–बदतर मनुष्यता पैदा होगी, क्योंकि आज के बदतर बच्चे कल संभोग करेंगे और अपने से बदतर लोगों को जन्म दे जाएंगे। हर पीढ़ी नीचे उतरनी चली जाएगी, यह बिल्कुल ही निश्चित है। इसकी 'प्रोफेसी' की जा सकती है, इसकी भविष्यवाणी की जा सकती है। सेक्स को 'स्प्रीच्युअलाइज' किए बिना, संभोग को आध्यात्मिक बनाए बिना कोई नई मनुष्यता पैदा नहीं हो सकती है ?

सेक्स को यह संस्कार शुद्ध पवित्र कर धर्म के जगत् में प्रविष्ट करता है। वीर्य की शक्ति ही उर्ध्वस्वी होकर मनुष्य को उन लोकों में ले जाती है, जिनका हमें कोई भी पता नहीं है, जहाँ कोई मृत्यु नहीं है, जहाँ कोई दुःख नहीं है, जहाँ आनंद के अतिरिक्त और कोई अस्तित्व नहीं है। उस सत् चित् आनंद में ले जाने वाली शक्ति और ऊर्जा किसके पास है और कहाँ है ? काम की ऊर्जा रूपान्तरित होकर प्रेम की अभिव्यक्ति बनती है। जैसे पत्तियों पर पड़े धुलकण आदि गंदगी धुलकर खाद बन जाता है और खाद फूलों की सुगंध बन जाती है।

अगर हम सारी प्रकृति में खोजने जायें तो हम पायेंगे, सारी प्रकृति में एक ही क्रिया जोर से प्राणों को घेर कर चल रही है। बीज तना बनाना चाहता है। तना पत्तियाँ बनाना चाहता है दोनो मिल कर कली बनाना चाहता है। कली फूल और फूल बीज को बनाना चाहता है। बीज क्या करेंगा? बीज फिर पौधा बनेंगा, फिर फूल बनेगा, फिर फल बनेगा। अगर हम सारे जीवन को देखें, तो जीवन जन्मने की एक अनंत क्रिया का नाम है। जीवन एक ऊर्जा है, जो स्वयं को पैदा करने के लिए सतत संलग्न है और सतत चेष्टाशील है।

मनुष्य के भीतर बिजली से बड़ी ताकत है सेक्स की । मनुष्य के भीतर अणु की शक्ति से बड़ी शक्ति सेक्स की है। कभी आपने सोचा यह शक्ति क्या है और कैसे हम इसे रूपांतरित करें ? एक छोटे–से अणु में इतनी शक्ति है कि हिरोशिमा का पूरा–का–पूरा एक लाख नगर भस्म हो सकता है। लेकिन क्या आपने कभी सोचा कि मनुष्य के काम की ऊर्जा का एक अणु एक–नए व्यक्ति को जन्म देता है? उस व्यक्ति में गाँधी पैदा हो सकता है, उस व्यक्ति में महावीर पैदा हो सकता है, उस व्यक्ति में बुद्ध पैदा हो सकता है, क्राइस्ट पैदा हो सकता है। उससे आइंसटीन पैदा हो सकता है, न्यूटन पैदा हो सकता है। एक छोटा–सा अणु एक मनुष्य की काम ऊर्जा का, एक गांधी को छिपाए हुए है। राम, कृष्ण जैसे विराट् व्यक्तित्व जन्म पा सकता है।

गर्भाधान संस्कार का संबंध मनुष्य की ऊर्जा के 'ट्रांसफार्मेशन' से है। धर्म का संबंध मनुष्य के शक्ति को रूपांतरित करने से है धर्म चाहता है कि मनुष्य के व्यक्तित्व में जो छिपा है, वह श्रेष्ठतम रूप से अभिव्यक्त हो जाय धर्म चाहता है कि मनुष्य का जीवन निम्न से उच्च की ओर एक यात्रा बने। पदार्थ से परमात्मा तक पहूँच जाय। खरबों लोगों के बीच कोई एकाध आदमी के जीवन में ज्योति जल जाती है और हम उसी का जयकार लगाते रहते है हजारों साल तक पूजा करते रहते हैं, उसी का मंदिर बनाते रहते हैं, उसी का गुणगान करते रहते हैं। आज तक हम रामलीला कर रहे हैं, कृष्णलीला कर रहे हैं । बुद्ध, महाबीर, क्राइस्ट के सामने घुटने टेके बैठे हैं। बस दो चार इने–गिने नाम अटके रह गये है मनुष्य जाति की स्मृति में।

अगर पृथ्वी पर हम गर्भाधान की धार्मिक प्रतिष्ठा वापस लौटा लाएं, अगर काम–वासना अध्यात्म उपासना बन जाय। अगर गर्भाधान एक आध्यात्मिक मूल्य ले ले, तो नए मनुष्य का निर्माण हो सकता है–नयी संतति का, नयी पीढियों का, नए आदमी का। और वह आदमी, वह बच्चा, वह भ्रूण जिसका पहला अणु प्रेम से जन्मेगा,

विश्वास किया जा सकता है, आश्वासन दिया जा सकता है कि उसकी अंतिम साँस परमात्मा में निकलेगी। जो प्रेम को ही नही पाता है, वह परमात्मा को पा ही नही सकता। जो सरिता ही नहीं है, वह सागर को कैसे पाएगी ?

अगर चाहते हैं कि पता चले कि प्रेम–तत्त्व क्या है–तो पहला सूत्र है काम की पवित्रता, दिव्यता, उसकी ईश्वरीय अनुभूति की स्वीकृति, उसका परम हृदय से, पूर्ण हृदय से अंगीकार। और आप हैरान हो जाएंगे, जितने परिपूर्ण हृदय से काम की स्वीकृति होगी, उतने ही काम से मुक्त होते चले जाएंगे। जितना अस्वीकार होता है, उतना ही हम में बंधते हैं। जितना स्वीकार होता है, उतने हम मुक्त होते हैं। अगर पूर्ण स्वीकार है, टोटल एक्सेप्टेबिलिटी है जीवन की, जो निसर्ग हैं, उसकी तो आप पाएंगे, वह परिपूर्ण स्वीकृति को मैं आस्तिकता कहता हूँ। वही आस्तिकता व्यक्ति को मुक्त करती है।

जब कोई अपनी पत्नी के पास ऐसे जाए कोई मंदिर के पास जाता है, जब कोई पत्नी अपने पति के पास ऐसे जाए जैसे सच में कोई परमात्मा के पास जाता है। क्योंकि जब दो प्रेमी काम से निकट आते हैं, जब वे संभोग से गुजरते हैं, तब सच में ही वे परमात्मा के मंदिर के निकट से गुजर रहे हैं। वही परमात्मा काम कर रहा है, उनकी उस निकटता में। वही परमात्मा की सृजनशक्ति काम कर रही है। मैं आपको बस एक ही बात कहना चाहता हूँ कि एक नयी मनुष्यता के जन्म के लिए सेक्स की पवित्रता, सेक्स की धार्मिकता स्वीकार करनी अत्यंत आवश्यक है; क्योंकि जीवन उससे जन्मता है। परमात्मा उसी कृत्य से जीवन को जन्माता है।

इस हेतु वह नर धौत वस्त्र के समान पापरहिता निर्मला अतएव यशस्विनी स्त्री के निकट आकर सन्तानोत्पादनार्थ दोनों एकान्त में बैठ विचार करें परन्तु कभी भी इस विवाहिता स्त्री को निरादर कर अपने इन्द्रिय को कहीं अन्यत्र दूषित न करें। [4] इसलिए ऋषि कहते हैं कि स्त्री जाति एक पवित्र वस्तु है इससे ही पुरूष जाति में बड़े बड़े महापुरूष और ब्रह्मवादिनी स्त्रियाँ उत्पन्न हुआ करती हैं अतः इसका शरीरांग पवित्र वेदि है, स्त्री मानो एक पवित्र यज्ञ है। इसलिए (स्त्रीणाम्+एषा+ह+वै+श्रीः) स्त्रियों में से यह विवाहिता स्त्री इस पुरुष की श्रीत्रशोभा, सम्पत्ति, गृहलक्ष्मी है (यद्+ मलोद्वासाः) क्योंकि शुद्ध, मल रहित वस्त्र के समान स्वच्छ यह परिणीता स्त्री है। इसका निरादर कदापि करना उचित नहीं (तस्माद्+मलोद्वाससम्+यशस्विनीम् +अभिक्रम्य+उपमन्त्रयेत) लोम बह्नि है, यज्ञ में बिछाने का मृग–चर्म तथा अधिवृषण ये मध्य में समिद्ध दोनों मुष्क हैं। इसके प्रत्येक अंग को यज्ञीय पदार्थवत् पवित्र मान, आदर की दृष्टि से देखता है। अर्थात् जो इस प्रकार स्त्री में यज्ञ की कल्पना कर उसे यज्ञ के समान पवित्र समझ कर उसके साथ बरतता है। उस गर्भाधान संस्कार (यज्ञ) करने हारे को वाजपेय यज्ञ से जितना फल होता है उतना फल इस पुरूष को होता है। जो इस तत्व को जानता हुआ स्त्री के साथ अधोपहास अर्थात् प्रजनन रूप यज्ञ सम्पादन करता है और वह इन स्त्रियों के शुभकर्म्म–सुकृत को पा लेता है, इस जाति को शुभकर्म्म सिखलाने के कारण इसके ऊपर अधिकारी बनता है और जो मूर्ख इस तत्व को न जानता हुआ अपवित्रता से अधोपहास करता है। इसके सुकृत को स्त्रियाँ लेती हैं अर्थात् उस मूर्ख पुरूष के ऊपर स्त्रियों का अधिकार होता है। [5] गृहस्थी का यही आचार–धर्म है, स्त्री को यज्ञ के समान पवित्र समझें। इस रहस्य को जानते हुए अरूण के पुत्र उद्दालक ने कहा था कि गृहस्थी का यही आचार–धर्म है, मुदगल के पुत्र नाक और कुमारहारित भी इसी को गृहस्थी का आचार–धर्म कहते थे। अनेक मनुष्य जो अपने को व्यर्थ में ब्राह्मण कहते है–वे इन्द्रिय–हीन, सुकृत–हीन होते हैं–इस लोक से चले जाते हैं, परन्तु उन्हें अन्त तक स्त्री को यज्ञ–रूप समझ कर उसके साथ बरताव करना नहीं आता।

महर्षि पाराशर [6] अपने गृह्यसूत्रों में बिल्कुल खूले स्पष्ट शब्दों में काम की पवित्रता का वर्णन करते है। महर्षि पाराशर के वचन से बिल्कुल मिलता जुलता ऋग्वेद का भी मन्त्र है जिसमें काम शास्त्र के रहस्य को वैसा ही खोलकर स्पष्ट वर्णन किया गया है जैसा कि पाराशर ऋषि ने। [7] हमारे ऋषियों ने तो इस 'काम विद्या' का अध्यात्म विद्या के साथ समन्वय कर उसे अध्यात्म विद्या का ही रूप दे दिया है। छान्दोग्य उपनिषद् में काम कलाओं को सामवेद के वामदेव्य गान की हिंकार आदि सप्त कला बताकर उसे सामवेद ज्ञान का रूप निम्न शब्दों में दिया है–''स्त्री के साथ एकान्त में प्रेमालाप करना हिंकार है। उसको आलिंगन आदि के द्वारा मनाना प्रस्ताव है। उसके पास सोना उद्गीथ है। उसके सहवास में रहना प्रतिहार है। उसके साथ कालयापन करना तथा उसकी कामवासना को तृप्त करना निधन है। इस प्रकार सामवेद का यह वामदेव्य गान पति–पत्नी के जोड़े में ओत प्रोत है।'' [8]

इसलिए मेरी समझ में, मेरी दृष्टि में, मेरी धारण में जिस दिन आदमी पूरी तरह आदमी के विज्ञान को विकसित करेगा, तो शायद पता लगेगा कि दुनिया में बुद्ध, कृष्ण और क्राइस्ट जैसे लोग शायद इसीलिए पैदा हो सके हैं कि उनके माँ–बाप ने जिस क्षण में संभोग किया था, उस समय वे अपूर्व प्रेम से संयुक्त हुए थे। प्रेम के क्षण में गर्भस्थापन, कंसेप्शन हुआ था। जिस दिन जन्मविज्ञान पूरी तरह विकसित होगा, उस दिन शायद हमको यह पता चलेगा कि जो दुनिया में थोड़े से अद्भुत लोग हुए–शांत, आनंदित, प्रभु को उपलब्ध–वे लोग वे ही हैं, जिनका पहला अणु प्रेम की दीक्षा से उत्पन्न हुआ था, जिनका पहला अणु प्रेम के जीवन में सराबोर पैदा हुआ था।

मेरी दृष्टि में जब एक स्त्री और पुरूष परिपूर्ण प्रेम के आधर पर मिलते हैं, उनका संभोग होता है, उनका मिलन होता है, तो उस परिपूर्ण प्रेम के तल पर उनके शरीर ही नहीं मिलते हैं, उनका मानस भी मिलता है, उनकी आत्मा भी मिलती है। वे एक लयपूर्ण संगीत में डूब जाते हैं, वे दोनों विलीन हो जाते हैं, और शायद परमात्मा ही शेष रह जाता है उस क्षण में। उस क्षण जिस बच्चे का गर्भाधान होता है, वह बच्चा परमात्मा को उपलब्ध हो सकता है, क्योंकि प्रेम के क्षण का पहला कदम उसके जीवन में उठ गया है। जब एक स्त्री और पुरूष परिपूर्ण प्रेम और आनंद से मिलते हैं, तो वह मिलन एक आध्यात्मिक कृत्य, स्प्रीचुअल एक्ट हो जाता है। फिर उसका काम, से कोई संबंध नहीं है। वह मिलन फिर कामुक नहीं है, वह मिलन शारीरिक नहीं है। वह मिलन अनूठा है। वह उतना ही महत्त्वपूर्ण है, जितनी किसी योगी की समाधि। उतना ही महत्त्वपूर्ण है वह मिलन, जब दो आत्माएं परिपूर्ण प्रेम से संयुक्त होती है। उतना ही पवित्र है वह कृत्य–क्योंकि परमात्मा उसी कृत्य से जीवन को जन्म देता है, और जीवन को गति देता है।

स्मरण रहे, जो पत्नी अपने पति को प्रेम करती है, उसके लिए पति देव हो जाता है। शास्त्रों के समझाने से नहीं होती यह बात। जो पति अपनी पत्नी से प्रेम करता है, उसके लिए पत्नी भी देवी हो जाती है; क्योंकि प्रेम किसी को भी परमात्मा बना देता है। जिसकी तरफ उसकी आँखे प्रेम से उठती हैं, वही परमात्मा हो जाता है। परमात्मा का कोई और अर्थ नहीं है।

जैसे मैंने आपसे कहा कि अगर जिस दिन जन्म–विज्ञान पूरा विकसित होगा, तो हम शायद पता लगा पांए कि कृष्ण का जन्म किन स्थितियों में हुआ। किस समस्वरता, हारमनी में कृष्ण के माँ–बाप ने, किस प्रेम के क्षण में गर्भ–स्थापन, कंसैप्शन किया इस बच्चे का। किस प्रेम के क्षण में यह बच्चा अवतरित हुआ। तो शायद हमें दूसरी तरफ यह भी पता चल जाए कि हिटलर किस अप्रेम के क्षण में पैदा हुआ होगा। मुसोलिनी किस क्षण पैदा हुआ होगा। तैमूरलंग, चंगेज खाँ किस अवसर पर पैदा हुए होंगे। हो सकता है कि चंगेज खां संघर्ष, घृणा और क्रोध से भरे माँ–बाप से पैदा हुआ हो। फिर जिंदगी भर वह क्रोध से भरा हुआ है। वह जो क्रोध का मौलिक वेब, ओरिजिनल मोमेंटम है वह, उसको, जिंदगी भर दौड़ाए चला जा रहा है। चंगेज खाँ जिस गाँव में गया, लाखों लोगों को कटवा दिया।

तैमूरलंग जिस राजधनी में जाता, दस–दस हजार बच्चों की गर्दनें कटवा देता, भाले में छिदवा देता। जुलूस निकालता तो दस हजार

बच्चों की गर्दनें लटकी हुई हैं भालों के ऊपर। पीछे तैमूर जा रहा है। लोग पूछते, ऐसा क्यों करता है? तो वह कहता है कि ताकि लोग याद रखें कि तैमूर कभी इस नगरी में आया था। इस पागल को याद रखने की और कोई बात समझ नहीं आयी थी! हिटलर ने जर्मनी में साठ लाख यहूदियों की हत्या की ! पाँच सौ यहूदी को रोज मारता रहा! स्टैलिन ने रूस में साठ लाख लोगों की हत्या की!

जरूर इनके जन्म के साथ कोई गड़बड़ हो गयी। जरूर ये जन्म के साथ ही पागल पैदा हुए। उन्माद इनके जन्म के साथ इनके खून में आया और फिर वे इसको फैलाते चले गए। जोर देकर मैं आपको यह कहना चाहता हूँ कि अगर सारे जगत में अध्यात्म प्रेम के केंद्र पर परिवार बन जाए तो अति–मानव, सुपरमैन की कल्पना, जो हजारों वर्षों से रही है, आदमी को महामानव बनाने की–वह जो नीत्शे कल्पना करते है, अरविंद कल्पना करते हैं–यह कल्पना पूरी हो सकती है। लेकिन न तो अरविंद की प्रार्थनाओं से और न नीत्शे के द्वारा पैदा किये गए सिद्धांतों से वह सपना पूरा हो सकता है।

## निष्कर्ष

सेक्स प्राकृतिक मार्ग है जो प्रकृति ने सभी जीवों एवं वनस्पतियों को दिया है। जो सृष्टि का पशुधरातल है। यदि मनुष्य इस धरातल से ऊपर न उठा तो वह पशु तुल्य ही है, मानव नहीं। [9] यदि मनुष्य केवल प्रकृति के दिये हुये द्वार का उपयोग करता रहेगा तो वह पशुओं से ऊपर नही हो सकता। पशु से मानव बनने के लिए पाशविक वृत्तियों पर धार्मिक संस्कार करना आवश्यक है। केवल रति और संतानोत्पत्ति ही पर्याप्त नहीं है, रति धार्मिक संस्कार से सीमित और संतान आध्यात्मिक भावना से ओत–प्रोत होना आवश्यक है।

गर्भाधान संस्कार ही हमारी अविच्छिन्न सांस्कृतिक परम्परा के प्राण हैं। इस संस्कार का विशेष रूप से अनुशीलन कर व्यवहारिक रूप देकर एक इच्छित खुश व स्वस्थ दिव्य संतान उत्पन्न करने के लिए माँ शारीरिक रूप से स्वस्थ, मानसिक रूप से प्रसन्न और आध्यात्मिक भावना से ओत–प्रोत व समर्थ रहे। जब आनंद में हों, जब प्रेम में हो, जब प्रफुल्लित हों और जब प्राण 'प्रेयरफुल' हों। जब ऐसा मालूम पड़े कि आज हृदय शांति से और आनंद से कृतज्ञता से भरा हुआ है, तभी क्षण है, तभी क्षण है संभोग के निकट जाने का। और वैसा व्यक्ति संभोग में अध्यात्मिक तल की संतान को प्राप्त करता है।

इस संस्कार की दिशा को अगर भावी पीढ़ी के निर्माता उर्ध्वगामी दिशा दे दे तो हर बीसवें वर्ष में मानव की उत्कृष्टता का स्तर बढ़ता चला जायेगा और एक दिन ऐसा आयेगा, जब मानव दिव्यगुणों से देदीप्यमान होगें, जिससे राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी के राम राज्य का सपना, राष्ट्रपति ए0 पी0 जे0 अब्दुल कलाम के मानव से महामानव बनाने की तमन्ना, वेदों की मनुर्भव (मनुष्य बनों) कहना और ऋषि–महर्षियों की दिव्य मानव बनाने की इच्छा पूर्ण होगी ।

## संदर्भ सूची–


1. 'धर्माविरूद्धो भूतेषु कामोऽस्मि भारतर्षभ ।''; गीता; अध्याय–७; श्लोक–११
2. 'काम एष क्रोध एष रजोगुण समूद्भवः ।
   महाशना महापाप्मा विद्धयेनमिह वैरिणम् ।।'' गीता; अध्याय– ३; श्लोक–३७
3. यदश्विना पृच्छमानावयातं त्रिचक्रेण वहतुं सूर्यायाः।
   क्वैकं चक्रं वामसीत् क्व देष्ट्राय तस्थथुः।।; अथर्ववेद; कांड–१४; सूक्त–१; मंत्र–१४
4. बृहदारण्यकोपनिषद् ब्राहमण–४;काण्डिका–६; श्रीपुत्रमन्थकर्म्म; पृष्ट–४८६
5. तस्या वेदिरूपस्थो लोमानि बहिश्चर्म्नाधिवृषणे समिद्धो मध्यतस्तौ मुष्कौ स यावान् ह वै वाजपेयेन यजमानस्य लोको भवति तावानस्य
   लोको भवति य एवं विद्वनधोपहासं चरत्यासां स्त्रीणां सुकृतं वृङक्तेऽय य इदमविद्वानषोपहासं चरत्यस्य स्त्रियः सुकृतं वृंजते।।३।। बृहदारण्यक–उपनिषद्; अध्याय–षष्ठं; ब्रह्मण–तीसरा;
   तस्याः–उस (स्त्री) की; वेदिः–(पुत्रेष्टि) यज्ञ का स्थल; उपस्थः–स्त्री–योनि है; लोमानि–रोम; बहिः–कुशा; चर्म–अधिवृषणे–मृग–चर्म और अधिवृषण; समिद्धः–प्रदीप्त; मध्यतः–मध्य भाग में; तौ–वे दोनों; मुष्कौ–अण्ड–कोष; सः वह; यावान्–जितना; ह वै–निश्चय से; वाजपेयेन–वाजपेय (यज्ञ) से; यजमानस्य–यज्ञ–कर्ता का; लोकः–स्थिति, फल–प्राप्ति; भवति–होता है; तावान्–उतना ही; अस्य–इसका; लोकः–स्थान, फल; भवति–होता है; यः–जो; एवम्–इस प्रकार; विद्वान्–जाननेवाला; अधोपहासम्–रति–कर्म; चरित–करता है; आसाम्–इन; स्त्रीणाम्–स्त्रियों के; सुकृतम्–सुकर्म को, पुण्य–फल को; वृङक्ते–पा लेता है; अथ–और; यः–जो; इदम्–इसको; अविद्वान्–न जानता (समझता) हुआ; अधोपहासम्–मैथुन–कार्य; चरित–करता है; अस्य–इस (मूर्ख) के; स्त्रियः–स्त्रियाँ; सुकृतम्–पुण्य को; वृंजते–हर लेती हैं।।३।।
6. सा ना पूषा शिवतमामैरय सा न उरू उशति विहर।
   यस्यामुशन्तः प्रहराम शेफं यस्यामु कामा बहवो निविष्ठयै।।
   महर्षि पाराशर गृह्यसूत्र; का0 १/४/१३
7. द्वितीयोऽध्यायः–गर्भाधान संस्कार की उत्पत्ति, आदिम स्रोत एवं उपजीव्य
8. ''उपमन्त्रयते स हिंकारः, ज्ञापयते सः प्रस्तावः, सहशेते स उद्गीथः, प्रतिस्त्री सह शेते सह प्रतीहारः, कालं गच्छति तन्निधनम्, पारंगच्छति तन्निधनम्, एतद् वामदेवं मिथुनं प्रोक्तम्।'' छान्दोग्य उपनिषद्
9. आहार निद्रा भय मैथुनश्च समानमेतत् पशुभिर्नराणाम्।
   धर्मोहि तेषामधिको विशेषोधर्मेन हीना पशुभिर्समाना।। विष्णु शर्मा कृत हितोपदेश